

कक्षा – द्वादशी
संस्कृतम् (ऐच्छिकम्) कोड सं. – (022)
आदर्शप्रश्नपत्रम् – 2024-25

समयः – होरात्रयम्

पूर्णाङ्कः – 80

सामान्यनिर्देशाः –

- कृपया सम्प्रक्षया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 10 पृष्ठानि मुद्रितानि सन्ति ।
- कृपया सम्प्रक्षया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 19 प्रमुखाः प्रश्नाः सन्ति ।
- उत्तरलेखनात् पूर्वं प्रश्नस्य क्रमाङ्कः अवश्यं लेखनीयः ।
- अस्य प्रश्नपत्रस्य पठनाय 15 निमेषाः निर्धारिताः सन्ति । अस्मिन् अवधौ केवलं प्रश्नपत्रं पठनीयम् उत्तरपुस्तिकायां च किमपि न लेखनीयम् ।

प्रश्नपत्रस्वरूपम् –

खण्डः (क) अपठित-अवबोधनम्	- 10 अङ्काः
खण्डः (ख) रचनात्मक-कार्यम्	- 10 अङ्काः
खण्डः (ग) अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्	- 15 अङ्काः
खण्डः (घ) (i) पठित-अवबोधनम्	- 25 अङ्काः
(ii) संस्कृतसाहित्येतिहासपरिचयः	- 10 अङ्काः
खण्डः (ङ) छन्दोऽलङ्कारपरिचयः	- 10 अङ्काः

निर्देशाः –

- (i) अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्च खण्डाः सन्ति ।
- (ii) प्रत्येकं खण्डम् अधिकृत्य उत्तराणि एकस्मिन् स्थाने क्रमेण लेखनीयानि ।
- (iii) प्रश्नसङ्क्षया प्रश्नपत्रानुसारम् अवश्यमेव लेखनीया ।
- (iv) सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि ।
- (v) प्रश्नानां निर्देशाः ध्यानेन अवश्यं पठनीयाः ।

खण्डः - 'क'

अपठित-अवबोधनम् 10 अङ्काः

<p>1. अधोलिखितं गद्यांशं पठिला प्रदत्तान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत -</p> <p>पुरा गुर्जरप्रान्ते एकस्मिन् स्थाने सुविष्वातमेकं गुरुकुलम् आसीत्। तत्र द्विशताधिकाश्छात्राः विविधविद्यापारङ्गतेभ्यः गुरुभ्यः अनेकान् विषयान् पठन्ति स्म। तत्र नगरस्थिता एका संस्था तेषां भोजनादिव्यवस्थाम् अकरोत्। एकदा संस्थाधिकारिणः गुरुकुलवासिनां चिकित्सायै एकं वैद्यं तत्र प्रेषितवन्तः। वैद्यः मासत्रयर्पयन्तम् आश्रमेऽवसत्। किन्तु कश्चिदपि रुग्णः तस्य समीपे चिकित्सायै न आगच्छत्। वैद्यराजः प्रधानाचार्यस्य समीपं गत्वा तमपृच्छत्-किम् अत्र कोऽपि रोगी न भवति? प्रधानाचार्यः विहस्य अवदत्- वैद्यराज! अस्य एकं रहस्यम् अस्ति। अत्र सर्वे तदा भोजनं कुर्वन्ति, यदा ते तीव्रक्षुधाम् अनुभवन्ति। यदा तेषां भोजनेन तृप्तिः भवति, ततः पूर्वम् एव ते भोजनं त्यजन्ति। एतदेव एतेषां स्वास्थ्यस्य रहस्यम् अस्ति। भवान् तु जानाति एव यत् स्वस्थाः नराः औषधं न सेवन्ते। तद्वचनं श्रुत्वा वैद्यः हसित्वा अवदत् - 'नास्त्यत्र वैद्यस्य कश्चिदुपयोगः'। अतोऽहं गच्छामि। नमस्कारः। यत्र रोगः तत्र वैद्यः।</p> <p>(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <ul style="list-style-type: none"> (क) कः अवदत् 'नास्त्यत्र वैद्यस्य कश्चिदुपयोगः'? (ख) संस्थाधिकारिणः केषां चिकित्सायै वैद्यं प्रेषितवन्तः? (ग) गुर्जरप्रान्ते कीदृशं गुरुकुलम् आसीत्? <p>(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <ul style="list-style-type: none"> (क) गुरुकुलवासिनां स्वास्थ्यस्य किं रहस्यमस्ति? (ख) छात्राः गुरुकुले किं कुर्वन्ति स्म? (ग) कीदृशाः नराः औषधं सेवन्ते? <p>(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत-</p> <p>(ई) निर्देशानुसारम् उचितम् उत्तरं चित्वा लिखत- (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <ul style="list-style-type: none"> (क) 'भवान् तु जानाति एव यत् स्वस्थाः नराः औषधं न सेवन्ते' अत्र 'जानाति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किं प्रयुक्तम्? <ul style="list-style-type: none"> (i) स्वस्थाः (ii) भवान् (iii) नराः (iv) औषधम् (ख) 'रुग्णाः' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशे किं प्रयुक्तम्? <ul style="list-style-type: none"> (i) औषधम् (ii) चिकित्सायै (iii) स्वास्थ्यस्य (iv) स्वस्थाः (ग) 'नगरस्थिता एका संस्था तेषां भोजनादिव्यवस्थाम् अकरोत्' वाक्येऽस्मिन् विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्? 	<p>10</p> <p>1×2=2</p> <p>2×2=4</p> <p>1</p> <p>1×3=3</p>
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------

	(i) संस्था	(ii) एका	
	(iii) नगरस्थिता	(iv) भोजनादिव्यवस्थाम्	
	(घ) ‘नास्त्यत्र वैद्यस्य कश्चिदुपयोगः’ अत्र क्रियापदं किं प्रयुक्तम्?		
	(i) अत्र	(ii) अस्ति	
	(iii) उपयोगः	(iv) कश्चित्	

खण्डः - ‘ख’

रचनात्मक-कार्यम्

10 अङ्काः

2. भवती वरेण्या बैंगलूरूनगरे एकस्मिन् छात्रावासे वसति । मात्रा लिखितपत्रेण भवती ज्ञातवती यद् भवदनुजः ऋतांशः चलभाषियन्नस्य अतिप्रयोगं करोति । अस्य यन्नस्य अतिप्रयोगः सर्वथा हानिकरः एव इति तं बोधयितुं मञ्जूषायां प्रदत्तसङ्केतानां सहायतया अनुजं प्रति पत्रमेकं लिखतु ।

मञ्जूषा-

शुभाशिषः, तत्रापि, स्यात्, प्रिय अनुज, चलभाषियन्नेण, अस्य अतिप्रयोगः, अध्ययनसमयमपि, उचितम्, सर्वविधं कुशलम्, अद्यैव, विनश्यति, स्वास्थ्याय, मन्ये, मात्रा लिखितम्, विवेकेन, विश्वासः, इतः परम्, हानिकरः, मातापितृभ्याम्, मम, निवेदयतु, सर्वदा, प्रणामान्, स्वेहम्, बैंगलूरूतः

अथवा

भवान् उद्गीथः द्वादशकक्षायाः छात्रः अस्ति । स्वविद्यालये संस्कृतसम्भाषण-शिविरम् आयोजयितुम् इच्छति । एतदर्थम् अनुमतिं प्राप्तुं प्रधानाचार्यं प्रति मञ्जूषायां प्रदत्तसङ्केतानां सहायतया पत्रमेकं लिखत ।

मञ्जूषा-

सम्मान्यः, महोदयः, सविनयम्, सर्वे, संस्कृतच्छात्राः, विद्यालयस्य, संस्कृतसम्भाषण-शिविरस्य, भवेत्, आयोजनम्, छात्रेषु, उत्साहः, अभ्यासः, संस्कृतसम्भाषणं प्रति, संस्कृतमयम्, वातावरणम्, सप्ताहपर्यन्तम्, परस्परम्, व्यवहरिष्यन्ति, संस्कृतेनैव, सरलतया, समर्थाः, अनुगृहीताः, सधन्यवादम् ।

3. प्रदत्ततथ्यानां सहायतया अधोलिखितं विषयम् अधिकृत्य संस्कृतेन अनुच्छेदं लिखत - 5
विषयः - जलमेव जीवनम् ।

जीवनाय जलस्य उपयोगित्वम्
वर्तमानकाले संसारे जलस्य स्थितिः
समस्या कारणानि च
जलरक्षणस्य उपायाः उपसंहारश्च

अथवा

हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखितवाक्येषु केषाञ्चन पञ्चवाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत ।

1. भारत के वीर सैनिक देशरक्षा के लिए सदा तत्पर रहते हैं ।

The brave soldiers of Bharat are always ready to defend the country.

2. बाल्यकाल में सभी बच्चों को विद्यालय जाकर अध्ययन करना चाहिए ।

All children should go to school and study during childhood.

3. सब छात्रों ने कठोर परिश्रम करके सफलता प्राप्त की थी ।

All the students had achieved success by working hard.

4. शिष्य आचार्य से व्याकरणशास्त्र पढ़ेंगे ।

The disciples will study grammar from Acharya.

5. तुम सब घर के चारों ओर पेड़ लगाओ ।

You all plant trees around the house.

6. वह घोड़ा एक पैर से लँगड़ा था ।

That horse was lame in one leg.

7. आप किस विद्यालय में पढ़ते हैं?

Which school do you study in?

खण्डः - 'ग'

अनुप्रयुक्त-व्याकरणम् 15 अङ्काः

<p>4. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कृत्वा लिखत । (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(क) अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्याम् उपासते । (ख) रघोः+उदारामपि गां निशम्य । (ग) कवचिनो दण्डिनो निषङ्गिणश्च रक्षितारः । (घ) कुमार! कृतम्+कृतमश्वेन ।</p>	1×3=3				
<p>5. रेखाङ्कितपदानां प्रकृतिप्रत्ययौ संयोज्य विभज्य वा उचितम् उत्तरं चित्वा लिखत । (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(क) तव <u>अर्हतः</u> नाभिगमेन तृप्तं मनो नियोगक्रिययोत्सुकं मे ।</p> <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%;">(i) अर्ह+शत्</td> <td style="width: 50%;">(ii) अर्ह+क्त</td> </tr> <tr> <td>(iii) अर्ह+क्तवतु</td> <td>(iv) अर्ह+तृच्</td> </tr> </table>	(i) अर्ह+शत्	(ii) अर्ह+क्त	(iii) अर्ह+क्तवतु	(iv) अर्ह+तृच्	1×3=3
(i) अर्ह+शत्	(ii) अर्ह+क्त				
(iii) अर्ह+क्तवतु	(iv) अर्ह+तृच्				

	<p>(ख) विरला: हि तेषाम् <u>उप+दिश्+तृच्</u> ।</p> <p>(i) उपदेष्टा (ii) उपदेष्ट (iii) उपदेष्टाः (iv) उपदेष्टारौ</p> <p>(ग) न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां <u>कर्मसङ्गिनाम्</u> ।</p> <p>(i) कर्मसङ्गं + अण् (ii) कर्मसङ्गं + शानच् (iii) कर्मसङ्गं + ठक् (iv) कर्मसङ्गं + णिनि</p> <p>(घ) अप्रबोधा <u>घोर + टाप्</u> च राज्यसुखसत्रिपातनिद्रा ।</p> <p>(i) घोरः (ii) घोरा (iii) घोरम् (iv) घोरटा</p>									
6.	<p>मञ्जूषायां प्रदत्तैः समुचितैः अव्ययपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा वाक्यानि लिखत । (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(क) जगदेकनाथः रघुः कौत्सं अकथयत् । (ख) क्रियमाणं कार्यम् अद्यैव समापयेत् । (ग) पुत्तलिकायाः वचनं श्रुत्वा राजा अभवत् । (घ) अथ परितो पर्वतश्रेणीव मेघमाला प्रादुरभूत् ।</p> <p style="text-align: center;">मञ्जूषा</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; display: inline-block;"> श्वः, तूष्णीम्, सहसा, भूयः </div>	1×3=3								
7.	<p>कोष्ठके प्रदत्तशब्देषु समुचितां विभक्तिं प्रयुज्य वाक्येषु रिक्तस्थानानि पूरयत । (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(क) अहं पूर्वं तव दर्शनम् इच्छामि । (गमन) (ख) अलम् । (चिन्ता) (ग) अश्वारोही न विरमति । (स्वकार्य) (घ) धनं विना सफलं न भवति । (दान)</p>	1×3=3								
8.	<p>अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां समुचितं विग्रहं समस्तपदं वा चित्वा लिखत । (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(क) छात्राणां कृते <u>योगशिक्षा</u> अतीव उपयोगी अस्ति ।</p> <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%;">(i) योगेन शिक्षा</td> <td style="width: 50%;">(ii) योगस्य शिक्षा</td> </tr> <tr> <td style="width: 50%;">(iii) योगाय शिक्षा</td> <td style="width: 50%;">(iv) योगे शिक्षा</td> </tr> </table> <p>(ख) वयं योगस्य विषये <u>विस्तरेण सहितम्</u> ज्ञातुमिच्छामः ।</p> <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%;">(i) सविस्तरम्</td> <td style="width: 50%;">(ii) सविस्तरेण</td> </tr> <tr> <td style="width: 50%;">(iii) सविस्तरेणसह</td> <td style="width: 50%;">(iv) विस्तरसहितम्</td> </tr> </table>	(i) योगेन शिक्षा	(ii) योगस्य शिक्षा	(iii) योगाय शिक्षा	(iv) योगे शिक्षा	(i) सविस्तरम्	(ii) सविस्तरेण	(iii) सविस्तरेणसह	(iv) विस्तरसहितम्	1×3=3
(i) योगेन शिक्षा	(ii) योगस्य शिक्षा									
(iii) योगाय शिक्षा	(iv) योगे शिक्षा									
(i) सविस्तरम्	(ii) सविस्तरेण									
(iii) सविस्तरेणसह	(iv) विस्तरसहितम्									

- (ग) महोत्साहः: अश्वारोही तोरणदुर्ग प्रयाति ।
- (i) महान् उत्साहः (ii) महत् उत्साहः: यस्य सः
 (iii) महान् उत्साहं यस्य सः (iv) महान् उत्साहः: यस्य सः
- (घ) बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतश्च दुष्कृतश्च ।
- (i) सुकृतदुष्कृतौ (ii) सुकृतदुष्कृतम्
 (iii) सुकृतदुष्कृते (iv) सुकृतम् दुष्कृतम्

खण्डः - (घ)

(i) पठितावबोधनम् 25 अङ्काः

<p>9. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत -</p> <p>इत्येवं विचार्य सर्वस्वदक्षिणं यज्ञं कर्तुमुपक्रान्तवान् । ततः शिल्पिभिरतीव मनोहरो मण्डपः कारितः । सर्वापि यज्ञसामग्री समहृता । देवमुनिगन्धव्यक्षसिद्धादयश्च समाहृताः । तस्मिन्नवसरे समुद्राह्वानार्थं कश्चिद्द्वाह्वणः समुद्रतीरे प्रेषितः । सोऽपि समुद्रतीरं गत्वा गन्धपुष्पादिषोडशोपचारं विधायाब्रवीत् “भोः समुद्र! विक्रमार्को राजा यज्ञं करोति । तेन प्रेषितोऽहं लामाह्वातुं समागतः ।” इति जलमध्ये पुष्पाञ्जलिं दत्वा क्षणं स्थितः । कोऽपि तस्य प्रत्युत्तरं न ददौ । तत उज्यिनीं यावत्प्रत्यागच्छति तावद्देवीप्यमानशरीरः समुद्रो ब्राह्मणरूपी सन् तमागत्यावदत् । “भो ब्राह्मण, विक्रमेणास्मानाह्वातुं प्रेषितस्वं, तर्हि तेन यास्माकं सम्भावना कृता सा प्राप्तैव । एतदेव सुहृदो लक्षणं यत्समये दानमानादि क्रियते ।”</p> <p>(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) अतीव मनोहरः मण्डपः कैः कारितः? (ii) ब्राह्मणः कुत्रु पुष्पाञ्जलिं दत्वा क्षणं स्थितः? (iii) राजा कीदृशं यज्ञं कर्तुमुपक्रान्तवान्?</p> <p>(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) ब्राह्मणः यावदुज्जयिनीं प्रत्यागच्छति तावत् किमभवत्? (ii) राजा यज्ञार्थं के समाहृताः? (iii) ब्राह्मणः गन्धपुष्पादिषोडशोपचारं विधाय किमब्रवीत्?</p> <p>(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) ‘अवदत्’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदं गद्यांशे किमस्ति? (ii) ‘आगत्य’ इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशे किं प्रयुक्तम्? (iii) ‘सर्वस्वदक्षिणं यज्ञं कर्तुमुपक्रान्तवान्’ वाक्येऽस्मिन् विशेषणपदं किं प्रयुक्तम्?</p>	5
<p>(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) अतीव मनोहरः मण्डपः कैः कारितः? (ii) ब्राह्मणः कुत्रु पुष्पाञ्जलिं दत्वा क्षणं स्थितः? (iii) राजा कीदृशं यज्ञं कर्तुमुपक्रान्तवान्?</p> <p>(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) ब्राह्मणः यावदुज्जयिनीं प्रत्यागच्छति तावत् किमभवत्? (ii) राजा यज्ञार्थं के समाहृताः? (iii) ब्राह्मणः गन्धपुष्पादिषोडशोपचारं विधाय किमब्रवीत्?</p> <p>(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) ‘अवदत्’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदं गद्यांशे किमस्ति? (ii) ‘आगत्य’ इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशे किं प्रयुक्तम्? (iii) ‘सर्वस्वदक्षिणं यज्ञं कर्तुमुपक्रान्तवान्’ वाक्येऽस्मिन् विशेषणपदं किं प्रयुक्तम्?</p>	$\frac{1}{2} \times 2 = 1$
<p>(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) ब्राह्मणः यावदुज्जयिनीं प्रत्यागच्छति तावत् किमभवत्? (ii) राजा यज्ञार्थं के समाहृताः? (iii) ब्राह्मणः गन्धपुष्पादिषोडशोपचारं विधाय किमब्रवीत्?</p> <p>(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) ‘अवदत्’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदं गद्यांशे किमस्ति? (ii) ‘आगत्य’ इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशे किं प्रयुक्तम्? (iii) ‘सर्वस्वदक्षिणं यज्ञं कर्तुमुपक्रान्तवान्’ वाक्येऽस्मिन् विशेषणपदं किं प्रयुक्तम्?</p>	$1 \times 2 = 2$
<p>(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) ‘अवदत्’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदं गद्यांशे किमस्ति? (ii) ‘आगत्य’ इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशे किं प्रयुक्तम्? (iii) ‘सर्वस्वदक्षिणं यज्ञं कर्तुमुपक्रान्तवान्’ वाक्येऽस्मिन् विशेषणपदं किं प्रयुक्तम्?</p>	$1 \times 2 = 2$

10.	<p>अधोलिखितं पद्यं पठिला तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत -</p> <p>समाप्तविद्येन मया महर्षिर्विज्ञापितोऽभूद् गुरुदक्षिणायै ।</p> <p>स मे चिरायास्खलितोपचारां तां भक्तिमेवागणयत् पुरस्तात् ॥</p> <p>(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) महर्षिः केन विज्ञापितः अभवत्? (ii) महर्षिः अस्खलितोपचारां काम् अचिनोत्? (iii) कौत्सेन का समाप्ता? <p>(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) कौत्सेन गुरुदक्षिणायै कः निवेदितः? (ii) महर्षिः कीटर्णीं भक्तिम् अगणयत्? (iii) समाप्तविद्यः कौत्सः किम् अकरोत्? <p>(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) श्लोके 'सः' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किं प्रयुक्तम्? (ii) 'अस्खलितोपचाराम्' इति विशेषणस्य विशेष्यपदं किम्? (iii) 'निवेदितः' इति अर्थे श्लोके किं पदं प्रयुक्तम्? 	<p>5</p> <p>$\frac{1}{2} \times 2 = 1$</p> <p>$1 \times 2 = 2$</p> <p>$1 \times 2 = 2$</p>
11.	<p>अधोलिखितं नाट्यांशं पठिला तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत -</p> <p>कौशल्या - जात! अस्ति ते माता? स्मरसि वा तातम्?</p> <p>लवः - नहि ।</p> <p>कौशल्या - ततः कस्य त्वम्?</p> <p>लवः - भगवतः सुगृहीतनामधेयस्य वाल्मीकेः ।</p> <p>कौशल्या - अयि जात! कथयितव्यं कथय ।</p> <p>लवः - एतावदेव जानामि ।</p> <p style="text-align: center;">(प्रविश्य सम्भ्रान्ताः)</p> <p>बटवः - कुमार! कुमार! अश्वोऽश्व इति कोऽपि भूतविशेषो जनपदेष्वनुश्रूयते, सोऽयमधुनाऽस्माभिः स्वयं प्रत्यक्षीकृतः ।</p> <p>लवः - 'अश्वोऽश्व ' इति नाम पशुसमान्नाये साङ्गामिके च पठ्यते, तद् ब्रूत - कीटशः?</p> <p>(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) कौशल्या लवं किं कथयितुम् आदिशति? (ii) 'स्मरसि तातम्' इति का पृच्छति? (iii) बटुभिः कः प्रत्यक्षीकृतः? <p>(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) 'ततः कस्य त्वम्' इति प्रश्नस्य उत्तरं किम्? 	<p>5</p> <p>$\frac{1}{2} \times 2 = 1$</p> <p>$1 \times 2 = 2$</p>

	<p>(ii) ‘अश्वोऽश्वः’ इति कुत्र पठ्यते?</p> <p>(iii) बटुभिः किम् अनुश्रूयते?</p> <p>(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत – (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) ‘पुत्र’ इति अर्थे नाट्यांशे किं पदं प्रयुक्तम्?</p> <p>(ii) ‘अश्वोऽश्व इति कोऽपि भूतविशेषः’ अत्र विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?</p> <p>(iii) ‘अयि जात! कथयितव्यं कथय’ वाक्येऽस्मिन् कर्तृपदं किम्?</p>	$1 \times 2 = 2$								
12.	<p>अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत – (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्)</p> <p>(क) अहम् आश्रमस्य सर्वविधम् <u>आयव्ययाकलनं</u> प्रेषितवती ।</p> <p>(ख) <u>मेघमालाभिः</u> द्विगुणितो महान्धकारः ।</p> <p>(ग) भवन्तः <u>यमनियमेत्यादीनां</u> प्रत्यक्षमनुभवं विधास्यन्ति ।</p> <p>(घ) <u>विषयेषु</u> अत्यासङ्गः पुरुषं नाशयति ।</p> <p>(घ) राजा सर्वोऽपि ब्राह्मणसमूहो दक्षिणया तोषितः ।</p>	$1 \times 4 = 4$								
13.	<p>अधोलिखितस्य श्लोकस्य अन्वयं लिखत ।</p> <p>कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।</p> <p>एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥</p>	3								
14.	<p>अधोलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थं संस्कृतभाषया लिखत ।</p> <p>न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।</p> <p>कार्यते ह्यवशःकर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥</p> <p>अथवा</p> <p>‘कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्’ इति पाठम् आधृत्य शिववीरचरस्य चरित्रचित्रणं सङ्कल्पेण संस्कृतभाषया लिखत ।</p>	3								
	<p>खण्डः - (घ)</p> <p>(ii) संस्कृत–साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः 10 अङ्काः</p>									
15.	<p>अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत । (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(क) ‘सौन्दरनन्द’ इति महाकाव्यस्य रचयिता कः आसीत्?</p> <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%;">(i) कालिदासः</td> <td style="width: 50%;">(ii) माघः</td> </tr> <tr> <td>(iii) अश्वघोषः</td> <td>(iv) भारविः</td> </tr> </table> <p>(ख) महाकविभट्टिविरचिते ‘भट्टिकाव्ये’ कति सर्गाः सन्ति?</p> <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%;">(i) द्वाविंशतिः</td> <td style="width: 50%;">(ii) द्वात्रिंशत्</td> </tr> <tr> <td>(iii) विंशतिः</td> <td>(iv) एकविंशतिः</td> </tr> </table>	(i) कालिदासः	(ii) माघः	(iii) अश्वघोषः	(iv) भारविः	(i) द्वाविंशतिः	(ii) द्वात्रिंशत्	(iii) विंशतिः	(iv) एकविंशतिः	$1 \times 3 = 3$
(i) कालिदासः	(ii) माघः									
(iii) अश्वघोषः	(iv) भारविः									
(i) द्वाविंशतिः	(ii) द्वात्रिंशत्									
(iii) विंशतिः	(iv) एकविंशतिः									

	<p>(ग) ‘कर्णाटराजतरङ्गिणी’? इति महाकाव्यं कः रचितवान्?</p> <p>(i) नयचन्द्रसूरि (ii) काशीनाथमिश्रः</p> <p>(iii) अरिसिंहः (iv) कल्हणः</p> <p>(घ) ‘परिक्रिया’ इति ऐतिहासिककाव्यभेदे अधोलिखितेषु किं काव्यम् अस्ति?</p> <p>(i) राजतरङ्गिणी (ii) महाभारतम्</p> <p>(iii) रघुवंशम् (iv) रामायणम्</p>	
16.	<p>प्रश्नानाम् उत्तराणि विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत । (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(क) ‘वासवदत्ता’ इति कथाग्रन्थस्य रचयिता कोऽस्ति?</p> <p>(i) बाणभट्टः (ii) दण्डी</p> <p>(iii) भासः (iv) सुबन्धुः</p> <p>(ख) कादम्बर्यानुसारं शुकनासः कम् उपदिष्टवान्?</p> <p>(i) तारापीडम् (ii) वैशम्पायनम्</p> <p>(iii) चन्द्रापीडम् (iv) पुण्डरीकम्</p> <p>(ग) ‘..... कवीनां निकषं वदन्ति’ । उचितविकल्पं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत ।</p> <p>(i) गद्यम् (ii) पद्यम्</p> <p>(iii) नाटकम् (iv) चम्पूः</p> <p>(घ) ‘आनन्दवृन्दावनचम्पू’ इति कस्य रचनास्ति?</p> <p>(i) वेङ्कटाध्वरि (ii) कविकर्णपूरः</p> <p>(iii) केशवभट्टः (iv) नीलकण्ठदीक्षितः</p>	1×3=3
17.	<p>प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत । (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्)</p> <p>(क) रूपकाणां कति भेदाः सन्ति ?</p> <p>(i) दश (ii) एकादश</p> <p>(iii) नव (iv) अष्ट</p> <p>(ख) ‘अभिज्ञानशाकुन्तलस्य’ कतमोऽङ्कः सर्वश्रेष्ठः मन्यते?</p> <p>(i) द्वितीयः (ii) प्रथमः</p> <p>(iii) चतुर्थः (iv) तृतीयः</p> <p>(ग) ‘चारुदत्तः’ इति कस्य नाटकस्य नायकः अस्ति?</p> <p>(i) वेणीसंहारस्य (ii) मालविकाश्मित्रस्य</p> <p>(iii) मुद्राराक्षसस्य (iv) मृच्छकटिकस्य</p> <p>(घ) विशाखदत्तः कं नाटकं प्रणीतवान् ।</p> <p>(i) दूतवाक्यम् (ii) मुद्राराक्षसम्</p> <p>(iii) शारिपुत्रप्रकरणम् (iv) विक्रमोर्वशीयम्</p>	1×4=4

- (ङ) ‘प्रबोधचन्द्रोदयम्’ इति नाटकं कः अरचयत्?
- (i) यशःपालः (ii) जयन्तभट्टः
- (iii) कृष्णमिश्रः (iv) वेदान्तदेशिकः

खण्डः -‘ङ’
छन्दोऽलङ्कारपरिचयः - 10 अङ्कः

18.	<p>(अ) अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत । (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(क) 'यगण' इति गणस्य चिह्नं किम्?</p> <p>(ख) 'मालिनी' छन्दसः लक्षणं किम्?</p> <p>(ग) 'वसन्ततिलका' इति छन्दसः एकमुदाहरणं लिखत ।</p> <p>(घ) 'रसैरुद्वैश्छिन्ना ----- शिखरिणी ।' इति लक्षणं पूरयत ।</p> <p>(आ) अधोलिखितश्लोकपङ्किषु प्रयुक्तं छन्दः परिचीय तस्य नाम लिखत । (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।</p> <p>(ख) अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः ।</p> <p>(ग) महिम्नामेतस्मिन् विनयशिशिरो मौग्ध्यमसृणो ।</p>	$1 \times 3 = 3$
19.	<p>(अ) अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत । (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(क) अनुप्रासालङ्कारस्य लक्षणं लिखत ।</p> <p>(ख) श्लिष्टैः पदैरनेकार्थ— । इति श्लेषलक्षणं पूरयत ।</p> <p>(ग) उत्प्रेक्षालङ्कारस्य एकम् उदाहरणं लिखत ।</p> <p>(घ) उपमालङ्कारस्य लक्षणं किम्?</p> <p>(आ) अधोलिखितासु श्लोकपङ्किषु प्रयुक्तालङ्कारस्य नाम लिखत । (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) अनलङ्कृतशरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम् ।</p> <p>(ख) दिदेश कौत्साय समस्तमेव पादं सुमेरोरिव वज्रभिन्नम् ।</p> <p>(ग) वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाध्यसन्ति ।</p>	$1 \times 3 = 3$
